

अपठित गद्यांश

भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी साहित्य के एक ऐसे स्तंभ हैं, जिन्होंने अपनी कलम से आधुनिक हिंदी साहित्य की नींव रखी। वे केवल कवि या नाटककार ही नहीं थे, बल्कि एक सच्चे समाज-सुधारक भी थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में देशप्रेम की भावना को जगाया और लोगों को अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व करना सिखाया। भारतेंदु ने साहित्य को मनोरंजन के साधन से कहीं बढ़कर, समाज को दिशा देने का माध्यम बनाया। उनकी भाषा बहुत सरल और सहज थी, जिसे आम जनता भी आसानी से समझ सकती थी। वे कविता, नाटक, निबंध और पत्रकारिता, सभी क्षेत्रों में सक्रिय थे। उन्होंने 'कविवचनसुधा' और 'हरिश्चंद्र मैगजीन' जैसी पत्रिकाएँ निकालकर लोगों तक अपने विचार पहुँचाए। उन्होंने स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह और बाल-विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों पर खुलकर लिखा। भारतेंदु जी ने प्राचीन भारतीय परंपराओं और पश्चिमी विचारों के बीच एक सुंदर संतुलन स्थापित किया, जिससे उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। उनके इसी योगदान के कारण उन्हें 'आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक' कहा जाता है।

गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए -

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र को किस उपाधि से जाना जाता है?

a) हिंदी साहित्य सम्राट

b) आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक

c) भारत रत्न

d) राष्ट्रकवि

2. भारतेंदु हरिश्चंद्र की भाषा की विशेषता क्या थी?

a) कठिन और जटिल

b) संस्कृत प्रधान

c) सरल और सहज

d) अंग्रेज़ी मिश्रित

3. निम्न में से कौन-सी पत्रिका भारतेंदु जी ने निकाली थी?

a) कविवचनसुधा

b) सरस्वती

c) प्राच्य भारती

d) आर्यपत्र

4. भारतेंदु जी ने किन सामाजिक मुद्दों पर लिखा?

a) स्त्री-शिक्षा

b) विधवा-विवाह

c) बाल-विवाह

d) उपरोक्त सभी

5. भारतेंदु जी किस विधा में सक्रिय नहीं थे?

a) नाटक

b) विज्ञान अनुसंधान

c) पत्रकारिता

d) कविता

Answer

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र को किस उपाधि से जाना जाता है?

उत्तर: b) आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक

2. भारतेंदु हरिश्चंद्र की भाषा की विशेषता क्या थी?

उत्तर: c) सरल और सहज

3. निम्न में से कौन-सी पत्रिका भारतेंदु जी ने निकाली थी?

उत्तर: a) कविवचनसुधा

4. भारतेंदु जी ने किन सामाजिक मुद्दों पर लिखा?

उत्तर: d) उपरोक्त सभी

5. भारतेंदु जी किस विधा में सक्रिय नहीं थे?

उत्तर: b) विज्ञान अनुसंधान